# मनोविश्लेषणवाद

## (Psycho -analysism)

## 3.3 मनोविश्लेषणवाद

आरधुनिक युग में जिस प्रकार राजनीति और आर्थिक व्यवस्था पर मार्क्सवाद का प्रभाव पड़ा है , उसी प्रकार कला, साहित्य और समाज पर मनोवैज्ञानिक खोजों तथा नये-नये मनोविश्लेषण -सिद्धांतों का बड़ा गहराई से प्रभाव पड़ा है । साहित्य का संबंध मानव-मन से हैं । साहित्य जो विविध चरित्रों का चित्रण करता है, वह किसी न किसी मनोवैज्ञानिक आधार पर होता है । साहित्यकार को उसका ज्ञान हो या न हो, पर उसके चित्रणों में मानव -मन के क्रिया-कलाप ही यथार्थ अथवा काल्पनिक रूप में प्रतिबिम्बित होते हैं । चाहे कविता हो, चाहे कथा-साहित्य अथवा चित्रकला या मूर्तिकला, सभी मानव-मन:स्थितियों का ही चित्रण करती हैं । मनुष्य के भीतर काम और अहम् की प्रवृत्ति बड़ी व्यापक और बड़ी गहरी होती है । ये प्रवृत्तियाँ दो रूप में हमारे सामने आती है - एक सहज, स्वाभाविक रूप में और दूसरे विकृत रूप में । मानव -जीवन में संघर्ष और टकराव की स्थिति इन्हीं प्रवृत्तियों के कारण बनती है । साहित्य में भी जो युद्ध संघर्ष, दुर्व्यवहार और सदाशयता आदि के चित्रण होते हैं, वे मानव की मानसिक क्रियाओं का आधार लेकर चलते हैं । साहित्य और कलाओं में इस प्रकार के चित्रण तो आदिकाल से चले आते हैं, पर इन चित्रणों के मनोवैज्ञानिक कारणों पर प्रकाश आधुनिक युग के चिंतकों ने डाला । उन्होंने जहाँ एक ओर जीवन के विभिन्न संघर्षों, द्वन्द्वों और टकराव के विश्लेषण द्वारा अपने सिद्धांतों का निरूपण किया ; वहीं साहित्य और कलाओं की सृजन प्रेरणा -प्रक्रिया और सृजन के स्वरूप में भी मनोवैज्ञानिक नियमों को ढूँढने का प्रयत्न किया ।

### 3.3.1 फ्रायड

यद्यपि मनोवैज्ञानिक अध्ययन और अनुसंधान विज्ञान की एक महत्वपूर्ण शाखा बन गयी है और उसमें योगदान करनेवाले असंख्य मनोवैज्ञानिक हैं, फिर भी जिनके सिद्धांतों ने कला और

Scanned with CamScanner

साहित्य को अतिशय प्रभावित किया है, ऐसे विचारकों में सिगमंडफ्रायड, ऐलफ्रेड एलडर, कार्लयुंग, मैक्डगल, हैवलाक, एलिस आदि का महत्वपूर्ण योगदान है । उनके विश्लेषणों ने न केवल कला और साहित्य को गहराई से प्रभावित किया है, वरन उसे एक नयी दिशा और प्रेरणा भी प्रदान की है । मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों पर इनका विचार ही मनोविश्लेषणवाद है । इस मतवाद के प्रबल पक्षधर सिगमंड फ्रयड माने जाते हैं जो इस धारा के प्रवर्तक हैं । बीसवीं शती का आलोचना साहित्य इनके मनोविज्ञान, संबंधी विचारों से विशष रूप से प्रभावित हुआ । सिगमंड फ्रायड (1856 से 1939) मनोविश्लेषणवादी आलोचना का आचार्य भी कहे जाते हैं । मूलत: एक डाक्टर थे और इनका प्रारंभिक शिक्षण रसायनशास्त्र, वनस्पतिशास्त्र एवं शरीरविज्ञान से हुआ था । उनकी विचारधारा का परिचय इस प्रकार है -

## 3.3.2 फ्रायड की मनोवैज्ञानिक पद्धति

फ्रायड के ग्रंथों से मनोविश्लेषण का एक जबरदस्त औजार चिकित्सकों को मिल गया । जिसका आज तक उपयोग हो रहा है । फ्रायड की मनोवैज्ञानिक पद्धति को तीन विषयों में बांटा जा सकता है -

1) अचेतन मन,

2) लिबडो या काम-वृत्ति,

3) ग्रंथियाँ ।

### 1) अचेतन मन :

फ्रायड की स्थापना है कि मनुष्य का मन एक समुद्र में तैरते हुए बर्फ के शिलाखंड (आइसवर्ग) के समान है । उसका जो भाग दिखाई देता है, वह पूरे हिमखंड का एक छोटा अंश होता है । उसका बहुत बड़ा भाग अदृश्य रहता है, परंतु कुछ भाग समुद्र के भीतर पानी में डूबे होने पर भी दिखाई देता है । यही स्थिति मानव -मन की भी होती है । उसके तीन भाग होते हैं -चेतन, अवचेतन या अर्द्धचेतन तथा अचेतन मन । चेतन मन से हम सब देखते और अनुभव करते हैं, पर अचेतन मन दमित इच्छाओं, आकांक्षाओं और गुप्त वासनाओं का एक शक्तिशाली पुंज है । मन का यह भाग हमारे लिए अशांत, अभेद्य, एवं रहस्यमय रहता है । इन दोनों के बीच अर्द्धचेतन या अवचेतन वह खंड है जिस पर अचेन की परछाई पड़ती रहती है । निद्रा के समय जब चेतन मन निष्क्रिय हो जाता है, तब अवचेतन मन की इच्छाएँ और वासनाएँ अवचेतन पर स्वप्न के रूप में प्रतिबिम्बित होती हैं । फ्रायड का मत है कि चेतन और अवचेतन में द्वन्द्व चलता रहता है । चेतन मन, व्यक्ति परिवार और

Scanned with CamScanner

समाज की नैतिकता और मर्यादा के संस्कारों से ओतप्रोत होता है, अत: जब अचेतन की इच्छायें और वासनायें चेतन के धरातल पर आने लगती हैं, तब चेतन के संस्कार उसका प्रतिरोध या निषेध करते हैं, वे असमाजिक एवं अनैतिक वासनाओं का दमन करते हैं । इस दमन का कारण मानसिक वर्सनाएँ और ग्रंथियाँ निर्मित हो जाती है । इन ग्रंथियों के कारण मानसिक विकृतियाँ उत्पन्न होती है, परंतु कभी-कभी अवचेतन की इच्छायें और वासनाएँ, चेतन मन के द्वारा परिस्कृत एवं उदात्त रूप में अभिव्यक्त की जाती है । यही अभिव्यक्ति कला और साहित्य का साधारण करती है ।

## 2) लिबिडो या काम वृत्ति : फ्रायड

मनुष्य के सभी क्रिया-कलाप के मूल में काम -वृत्ति को मानते हैं । धर्म, अर्थ, साहित्य और संस्कृति की मूल प्रेरणा भी यही काम-वृत्ति है । मनुष्य की कुण्ठित और दमित असामाजिक इच्छायें और प्रवृत्तियाँ उदात्त और परिष्कृत होकर कलाओं और संस्कृतियों का निर्माण करती हैं । फ्रायड काम-वृत्ति को ही साहित्य सर्जना की मूल प्रेरणा मानते हैं । उनका विचार है कि साहित्यकार कल्पनाशील होता है. अत: वह अपनी वर्णनाओं को काम-प्रतीकों के रूप में प्रकट करता है । कला और साहित्य -सृजन काम -प्रतिकों का पुनर्निर्माण है । कला के रहस्य की सृजन -प्रक्रिया का पूरा विश्लेषण करें । उनका विचार है कि केवल कला ही नहीं, वरन प्रत्येक सर्जनात्मक क्रिया में अचेतन मन की वासनायें विद्यमान रहती हैं । इस प्रकार स्वप्न , कल्पनायें. योजनायें आदि मानसिक व्यापार भी कविता या कला के समान ही है । ये काम तअप्ति के रूप हैं ।

## 3. ग्रंथियाँ या वर्जनायें :

फ्रायड का मत है कि इच्छाओं और वासनाओं के दमन से ग्रंथियाँ या कुंठायें हो जाती हैं । वासनाओं के उदात्तीकृत से ग्रंथियाँ खुलती और कुंठायें दूर हो जाती हैं और इस उदात्तीक परिष्कृत क्रिया -कलाप से सभ्यता का विकास एवं सांस्कृतिक मूल्यों का निर्माण होता है । आदिम बर्बर वासनायें एक सुसंस्कृत व्यवहार का रूप धारण करती हैं । कला और साहित्य भी इसीका एक रूप है । फ्रायड का विचार है कि वासनाओं की तृप्ति का सुख तीव्र होता है, जबकि कला और साहित्य का आनन्द मंद और आह्लादमय होता है ; पर वह सामूहिक होता है और अधिक स्थायी भी । वासनाओं की तृप्ति शारीरिक होती है, कला का आनन्द मानसिक होता है । कला संप्रेषणपरक है, अत: उसका सामाजिक महत्त्व है तथा उसका साधारणीकरण भी होता है । उसी के द्वारा समाज के चेतन -संस्कार बनते हैं । कलात्मक अभिव्यक्ति कुंठाओं और ग्रंथियों में मुक्तिप्रदान करती है ।

Scanned with CamScanner

इसीलिए वह कलाकार के लिए आनन्द का स्रोत है ।

मनोविश्लेषणवाद की स्थापना के संदर्भ में फ्रायड के सिद्धांतों को यौनवाद भी कहा जा सकता है । कला और साहित्य पर भी उनके विचारों का बेहद प्रभाव पड़ा है । इसका मनोविश्लेषणवाद केवल उन्हीं तक सीमित नहीं है, अन्य मनोविश्लेषकों ने अपने अनुसंधानों द्वारा कुछ नये सिद्धांत भी दिये हैं । फ्रायड के ही संस्कारियों और शिष्यों में ऐडलर और प्रयुगने फ्रायड से भिन्न सिद्धांतों का प्रतिपादन किया है ।

एडलर - के मनोविज्ञान में लिबिडो अथवा कामवृत्ति का उतना महत्व नहीं है, जितना अहम् का । उनका मत है कि फ्रायड कामवृत्ति को अनावश्यक महत्त्व देते हैं ; मानसिक स्नायविक रोगों का मूल कारण कामवृत्ति के अतिरिक्त अह की मांग भी हो सकती है । प्रत्येक व्यक्ति में स्वाभाविक मूल प्रवृत्ति 'अहंस्थापना' (Self assertion) की होती है । इस अहं -स्थापना की इच्छा और जीवन के यथार्थ का विरोध ही मानसिक जीवन की मुख्य समस्या है । यह इच्छा जीवन के तीन क्षेत्रों में व्यक्त होती है - समाज, व्यवसाय और विवाह । इस प्रकार ऐडलर के मनोविज्ञान में आत्मस्थापना की प्रवृत्ति ही प्रमुख है, कामवृत्ति नहीं । मानसिक स्नायविक रेखा का मूल कारण हीनत्व -कुंठा है, यथार्थ से संघर्ष के कारण व्यक्ति के आत्मस्थापन को संतोष नहीं मिल पाता और उसमें हीनत्वभावना विकसित हो जाती है । इस भावना से मुक्ति पाने के लिए परिणाम स्वरूप कुछ व्यक्तियों में अत्यधिक गर्व आ जाता है । जिसे हम हीनत्वकुंठा का कपट -रूप मान सकते हैं । हीनत्वभावना से बचाव के लिए व्यक्ति कुछ सरल साधन खोज लेता है, वह साधन कुछ विशेष -'जीवन -शैली' होती है । जीवन -शैली जीवन के प्रारंभिक वर्षों में ही निश्चित हो जाती है और परिवार में व्यक्ति की स्थिति से निश्चित होती है । ऐडलर के अनुसार एकलौते बच्चे, प्रथम संतान, द्वितीय संतान, अंतिम संतान सबकी जीवन-शैली पारिवारिक वातावरण से निश्चित होती है । ऐडलर के इन सिद्धांतों का साहित्य और अन्य विचार क्षेत्रों पर उतना प्रभाव तो नहीं पड़ा, जितना फ्रायड के मत का . फिर भी उनके दिये हुए तथ्य मानसिक जीवन की समस्याओं को सुलझाने में काफी सहायक सिद्ध हुए हैं और साहित्य में भी उनका उपयोग होता है ।

जंग ने भी मनोविश्लेषणवाद के सिद्धांतों में कुछ सुधार करके अपना मत दिया है । वह भी फ्रायड के इस मत के विरोधी थे कि जीवन की प्रमुख प्रेरक शक्ति काम है । उन्होंने 'लिबिडो' शब्द का अधिक विस्तृत अर्थ लिया, जिसमें फ्रायड की कामवृत्ति और ऐडलर की आत्मस्थापना -प्रवृत्ति, दोनों ही सम्मिलित है । वह उसे जीवन की वह प्रारंभिक और सामान्य प्रेरक शक्ति मानते हैं, जो मानव के सभी व्यवहारों में व्यक्त होती है । यह वह मूल शक्ति है जो विकास क्रिया और जनम, तीनों लक्ष्यों में अपने को व्यक्त करती है । जुंग के मनोविज्ञान का दूसरा महत्त्वपूर्ण पक्ष यह है कि उनके

Scanned with CamScanner

अनुसार यह शक्ति एक अंतिम साम्यावस्था की ओर उन्मुख रहती है ।

जुंग का सबसे महत्त्वपूर्ण सिद्धांत व्यक्तित्व के प्रकारों का सिद्धान्त है । उनके अनुसार व्यक्ति मुख्यत: दो प्रकार के होते हैं । एक तो वे जिनका ध्यान और शक्ति अपने पर ही केन्द्रित रहती है, दूसरे वे जिनकी शक्ति सामाजिक और भौतिक वातावरण की ओर प्रकट होती है । पहले प्रकार के व्यक्ति 'अंतर्मुखी' और दूसरे प्रकार के 'बहिर्मुखी' होते हैं । 'अंतर्मुखी' व्यक्ति विचारों और भावनाओं में केन्द्रित होने के कारण अधिक भावुक, कल्पनाशील, एकांतप्रिय और अव्यावहारिक होते हैं । 'बहिर्मुखी' व्यक्ति व्यवहार -कुशल, सामाजिक और क्रियाशील अधिक होते हैं । गेस्टाल्ट साइकोलोजी और सीखने के मनोविज्ञान का साहित्य के नये विचारों पर व्यापक प्रभाव है ।

मनोविश्लेषणवाद -सिद्धांत विचार- जगत में न्यूटन- कोपर निकस, आईंस्टाइन और मार्क्स के सिद्धातों की भाँति क्रांतिकारी सिद्ध हुआ है । वह बीसवीं शताब्दी में विश्व-मनीषा का एक अन्यतम महत्वपूर्ण तथा अविभाज्य अंग बन गया है । मनुष्य के हृदय तथा उसकी वास्तविक प्रेरणाओं का जो ज्ञान पहले केवल प्रतिभाशाली अंतदृष्टि के लिए ही संभव था, वह अब सामान्य ज्ञान का विषय है । साहित्य और कला पर भी इसका व्यापक प्रभाव पड़ा है ।

## 3.3.3 निष्कर्ष :

सामान्यतया मनोविश्लेषणवादी विचारकों ने जिन साहित्यिक मान्यताओं की स्थापना की है उनमें से अधिकांश व्यक्ति -वैचित्र्य के धरातल पर प्रतिष्ठित हैं और मार्क्सवादी विचारकों ने मनोविश्लेषणवादी साहित्य की कटु आलोचना करते हुए साहित्य की लोकोन्मुखता पर ही बल दिया है । इस प्रकार मनोविश्लेषणवादी सिद्धांतों का बहुत अधिक विरोध होते हुए भी न केवल अनेक पाचात्य विद्वान मनोविश्लेषणवाद से प्रभावित जान पड़ते हैं अपितु हमारे हिंदी साहित्य पर भी मनोविश्लेषणवाद का प्रर्याप्त प्रभाव पड़ा है ।

Scanned with CamScanner